|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 1. Mai 2025 | | |
| **3. Sonntag der Osterzeit C** | | |
| Erste Lesung: Apg 5, 27b-32.40b-41; Zweite Lesung: Off 5,11-14; Evangelium: Joh 21,1-19 (oder 21,1-14) | | |
|  |  |  |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 328, 1+5-7 | Gelobt sei Gott |
|  | GL 326, 1+2+4 | Wir wollen alle fröhlich sein |
|  | GL 754 | Halleluja, lasst uns singen |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 5 | Herr Jesus, auferstanden |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 714 | Ehre, dir Gott |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 30, 2. 4-6. 12 u. 13 |  |
|  | Kehrvers: GL 58, 1 | Lobe den Herrn, meine Seele |
|  | Kehrvers: GL 323 | Du hast mein Klagen |
|  | GL 324, 1-3 | Vom Tode heut erstanden ist |
|  |  |  |
| Halleluja: | GL 175, 2 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Christus ist erstanden.* |  |
|  | *Er, der Schöpfer des Alls, hat sich aller Menschen erbarmt.* | |
|  |  |  |
| Credo: | GL 177 | Credo in unum Deum |
|  | GL 759 | Der Glaube ist nun fest verbürgt |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 325, 1-3 | Bleibe bei uns |
|  | GL 757 | Nun freue dich, du Christenheit |
|  | GL 474, 1+4+5 | Wenn wir das Leben teilen |
|  | GL 184 | Herr, wir bringen in Brot und Wein |
|  | GL 472 | Manchmal feiern wir |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 718 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 762 | Verklärter Leib |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 763 | Sei Siegesfürst, gebenedeit |
|  | GL 755 | Halleluja! Auferstanden |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 525, 1-4 | Freu dich, du Himmelskönigin |
|  | GL 533, 1+2 | Lasst uns erfreuen herzlich sehr |
|  | oder ein anderes Marienlied | |
|  |  | |